दूर दृष्टि पक्का इरादा

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय राजस्थान

जीवन निर्माण का बहुत अच्छा सूत्र है दूर दृष्टि और पक्का इरादा। दूर दृष्टि का अर्थ है कि व्यक्ति को दूरदर्शी होना चाहिए। कोई कार्य करने के पहले चिन्तन, मनन और निदिध्यासन आवश्य है। दूर दृष्टा व्यक्ति समाज को नई दिशा देता है। महापुरूषों का जीवन दूर दृष्टि वाला होता है। चाहे पारिवारिक कार्य हो, चाहे सामाजिक कार्य हों या चाहे राष्ट्रीय कार्य हों दूर दृष्टि रखकर कार्य प्रारम्भ करना चाहिए। कार्य प्रारम्भ करने में आत्मविश्वास का होना बहुत जरूरी है। कार्य को प्रारम्भ करने के बाद यदि बीच में कोई बाधा आवे तो कार्य को छोड़कर पलायन नहीं करना चाहिए। जो भी समस्या हो उसका निदान करना चाहिए। यदि मनुष्य का इरादा पक्का होता है तो वह असम्भव को भी सम्भव बना देता है। भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र भाई मोदी किसी कार्य को करने से पहले दूर दृष्टि और पक्का इरादा रखते हैं। कार्य को प्रारम्भ करने के बाद चाहे कितनी भी कठिनाई आये उसको पूरा करके ही छोड़ते हैं। कठिनाईयों को जीतकर आगे बढ़ने की कला उनमें है। भारत देश को एक महाशक्ति के रूप में उन्होंने स्थापित कर दिया है। मनुष्य अकेले ही चाहे तो देश की दिशा और दशा को बदल सकता है। भगवान बुद्ध, भगवान महावीर, भगवान शंकराचार्य जैसे महापुरूषों ने सम्पूर्ण भारत की दशा और दिशा को परिवर्तित कर दिया। दूर दृष्टि और पक्का इरादा उनके जीवन का प्रमुख लक्ष्य था। जब मनुष्य सत्य मार्ग पर चलता है तो सभी लोग उनका साथ देते हैं।

हम जो चिन्तन करते हैं उसके प्रति समर्पित हो जाना दृढ़ संकल्प है। ऊँचे लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए दृढ़ संकल्प की आवश्यकता होती है। मनुष्य के पास विकसित तन, मन और दृढ़ इच्छा है। यदि मनुष्य का संकल्प दृढ़ रहे तो वह किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करने में समर्थ हो जायेगा। भूत वर्तमान और भविष्य को समझने और जानने की शक्ति मनुष्य के पास है। दृढ़ संकल्प शक्ति से एकाग्रता बढ़ती है। एक जगह चित्त होने से आनन्द की प्राप्ति होती है। नकारात्मकता दूर हो जाती है। दृढ़ संकल्पवान आगे बढ़ता है। जितने भी उद्योगपति है वे दृढ़

संकल्प के धनी हैं। सूचना क्रान्ति लाने में उद्योगपतियों ने कड़ी मेहनत की है। भारत के प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र भाई मोदी दृढ़ संकल्प के धनी है। वे जिस लक्ष्य को निर्धारित कर लेते हैं उसे प्राप्त करने के लिये जीजान से प्रयास करते हैं। उनके साथ 125 करोड़ देशवासियों की शक्ति कार्य करती है। अपने पड़ोसी देशों के साथ आंख से आंख मिला लेने की शक्ति उनकी दृढ़ इच्छा शक्ति का परिणाम है। दृढ़ संकल्प शक्ति के साथ कार्य करते हुए भारत को एक नयी ऊंचाई पर पहुंचा दिया है। दृढ़ संकल्प शक्ति के लिये कड़ी मेहनत, दूर दृष्टि और पक्का इरादा होना बहुत आवश्यक है।

कड़ी मेहनत का अर्थ है सही दिशा में पुरुषार्थ करना। मेहनत के साथ लक्ष्य स्पष्ट होना चाहिए। लक्ष्य स्पष्ट होने से उसकी प्राप्ति हो जाती है। जब लक्ष्य ही स्पष्ट नहीं रहेगा तो किया गया प्रयास लक्ष्य को प्राप्त नहीं करा सकता और किया गया परिश्रम व्यर्थ हो जाता है। विद्यार्थी जीवन में ही मेहनत का अभ्यास शुरू कर देना चाहिये। विद्यार्थी जब विद्यालय में जाता है तभी से यह प्रक्रिया प्रारंभ हो जानी चाहिए। कक्षा दस तक आते–आते विद्यार्थी जागरूक हो जाता है। उसे आगे क्या बनना है, उसी अनुसार विषयों का चयन करके परिश्रम प्रारंभ कर देना चाहिए। कक्षा बारह पास करते ही विद्यार्थी के सामने अनेक विकल्प खुले रहते है। विकल्पों के साथ–साथ अपनी शक्ति और सामर्थ्य का भी अंदाजा लगा लेना चाहिए। जीवन के रणक्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के लिए बहुत कुछ है। यही से ही प्रशासनिक सेवाओं का विकल्प, चिकित्सकीय सेवाओं का विकल्प, आभियंत्रकीय, वाणिज्यिक और व्यापारिक तथा इसी प्रकार के अन्य सेवाओं के विकल्प खुले रहते है। विद्यार्थी को कौनसा विकल्प चुनना है यह उसके सामर्थ्य पर निर्भर करता है। कुछ क्षेत्र की सेवाओं का कार्य कम परिश्रम से भी प्राप्त हो सकता है, किन्तु कुछ सेवाएं ऐसी हैं जिनको प्राप्त करने के लिए करो या मरो के मार्ग पर चलना पड़ता है। तभी जीवन में सफलता प्राप्त हो सकती है और जीवन खुशहाल रह सकता है। विद्यार्थी जीवन में किया गया परिश्रम जीवन भर के लिए सुख और शांति का प्रदाता होता है। जिसने अपने विद्यार्थी जीवन को व्यर्थ के कार्यों में नष्ट कर दिया उसको जीवन भर दुःख भोगना पड़ता है और दूसरों के सहारे जीवन–यापन करना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति समाज पर बोझ होकर जीवन–यापन करता है। विद्यार्थियों को जीवन में ऐसा

प्रयास करना चाहिए कि जीवन में सफलता प्राप्त हो और दूसरे लोगों को भी संबल दिया जा सके। द्रौपदी के स्वयंवर के समय अनेक राजे–महाराजे लक्ष्य को भेदने के लिए प्रयास किये थे, किन्तु उनका प्रयास सफल नहीं रहा। केवल अर्जुन ने अपने कड़े परिश्रम से लक्ष्य पर निशाना साध करके ऐसा शरसंधान किया कि उनको सफलता मिली। अर्जुन की तरह ही निश्चित लक्ष्य के ऊपर जो व्यक्ति शरंसधान करता है वही जीवन क्षेत्र में सफल हो पाता है। सदैव लक्ष्य ऊँचा बनाना चाहिए। ऊँचा लक्ष्य बनाने से सफलता अवश्य मिल जाती है। संसार में जितने भी महापुरुष हुये है उनके जीवन का मूलमंत्र कड़ी मेहनत है। जन्म से कोई महान् नहीं होता, कड़े परिश्रम और मेहनत से ही कोई व्यक्ति महान् होता है।